11. मुगल साम्राज्य

बाबर (1526-1530)–

- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था। इन्होने पद पदशाही की स्थापना की।
- इसने कलन्दर की उपाधि धारण की।
- बाबर फरगना की गद्दी पर 8 जून, 1494 को बैठा।
- बाबर ने 1507 में बादशाह की उपाधि धारण की।
- बाबर ने भारत पर पांच बार आक्रमण किया।
- मुबईयान नामक पद्यशैली का जन्मदाता।
- **बाबर द्वारा लड़े गए युद्ध–**

युद्ध	शासक	समय	विशेष घटना
पानीपत का प्रथम युद्ध	बाबर एवं इब्राहिम लोदी	1526	– तोप का प्रयोग
खानवा का युद्ध	बाबर एवं राणा सांगा	1527	– जेहाद का नारा दिया
चन्देरी का युद्ध	बाबर एवं मेदनी राय	1528	
घाघरा का युद्ध	बाबर एवं अफगान	1529	– बाबर का भारत में अंतिम युद्ध

- खानवा युद्ध में विजय के बाद बाबर ने गाजी की उपाधि धारण की।
- बाबर ने अपनी आत्मकथा बाबरनामा की रचना तुर्की भाषा में की
- बाबर ने अपनी पुस्तक में सात राज्यों की चर्चा की:
  (1) बंगाल (2) दिल्ली
  (3) मालवा (4) गुजरात
  (5) बहमनी (6) विजयनगर
  (7) मेवाड़
- बाबरनामा का फारसी में अनुवाद अब्दुल रहीम खानखाना ने किया।

हुमायूँ (1530-1540) (1555-56)

- आगरा में 23 वर्ष की अवस्था में गद्दी पर बैठा।
- 1533 में दीनपनाह नगर की स्थापना।
- हुमायू 1539 में चौसा के युद्ध में शेर खां से हारा।
- 1540 में बिलग्राम/कन्नौज युद्ध में शेर खां से हार के बाद शेरखां ने दिल्ली व आगरा पर कब्जा कर लिया था।
- बिलग्राम युद्ध के बाद हुमायूँ सिन्ध चला गया।
- हुमायु ज्योतिष में विश्वास करता था इसलिए सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनता था।
- हुमायूंनामा की रचना गुलबदन बेगम ने की थी।

शेरशाह

- पानीपत के युद्ध में 'तुगलुमा युद्ध पद्धति' का प्रयोग किया।
- बाबर के चार पुत्र थे-
  हुमायु, कामरान, अस्करी तथा हिंदाल
- बाबर को काबुल में दफनाया गया।
- बाबर ने गज-ए-बाबरी नामक माप का प्रयोग सड़कों को मापने के लिए किया गया।
- 1519 में बाबर ने पहला आक्रमण बाजौर पर किया था।

- सूर साम्राज्य का संस्थापक शेरशाह था।
- बचपन का नाम फरीद खां।
- एक शेर को तलवार के एक ही वार से मारने के कारण बहार खां लोहानी ने इसे शेरखां की उपाधि दी। शेरशाह ने अपने सम्पूर्ण साम्राज्य को 47 सरकारो में विभाजित किया था।
- शेरशाह का मकबरा सासाराम में है।
- ग्रैंड ट्रंक रोड की मरम्मत।
- डाक-प्रथा का प्रचलन।
- फसलदारों की सूची को रई कहते थे।
- 178 ग्रेन चांदी का रुपया एवं 380 ग्रेन तांबे के दाम चलाया।
- कबूलियत एवं पट्टा प्रथा की शुरूआत।
- पुराना किला के निर्माण शेरशाह ने करवाया था।
- रोहतास गढ़ किला एवं किला-ए-कुहना मस्जिद का निर्माण।
- सूर साम्राज्य का अंतिम शासक आदिलशाह सूर था।

अकबर

- जन्म– 15 अक्टूबर, 1542 को हमीदा बानू बेगम के गर्भ से। (अमरकोट में)
- राज्याभिषेक– 14 फरवरी, 1556 को कालानौर (पंजाब)में।
- शिक्षक– अब्दुल लतीफ ईरानी
- बैरम खां 1556 से 1560 तक अकबर का संरक्षक रहा।
- पानीपत का द्वितीय युद्ध 1556 में अकबर एवं हेमू के बीच हुआ।

- हल्दीघाटी का युद्ध 1576 में अकबर और मेवाड़ के शासक महाराणा प्रताप के बीच हुआ।
- 1560-1562 तक के शासन काल को पेटीकोट शासन कहते है।
- हेमू ''विक्रमाद्वित्य'' की उपाधि धारण करने वाला भारत का 14 वां शासक था।
- अकबर ने दाऊद खॉ को पराजित कर भारत से अन्तिम अफगान शासक का अन्त कर दिया (1576)
- अकबर का प्रथम और अंतिम विजय मालवा और आसीरगढ़ था।

अकबर द्वारा किये गये कार्य–

दास प्रथा की समाप्ति	–	1562
तीर्थ यात्रा कर की समाप्ति	–	1563
जजिया कर की समाप्ति	–	1564
फतेहपुर सिकरी की स्थापना	–	1571 जो अकबर की दुसरी राजधानी थी
इबादत खाने की स्थापना	–	1575
मजहर की घोषणा	–	1579
दिन-ए-इलाही की घोषणा	–	1582

- अकबर का सेनापति मानसिंह था।
- गुजरात विजय के दौरान अकबर सर्वप्रथम पुर्तगालियों से मिला। यहीं उसने सर्वप्रथम समुद्र को देखा।
- दीन-ए-इलाही धर्म का प्रधान अकबर था।
- दीन-ए-इलाही धर्म स्वीकार करने वाला प्रथम एवं अंतिम व्यक्ति बीरबल था।
- अकबर ने जैनाचार्य हरिविजय सूरि को जगतगुरु की उपाधि प्रदान की।
- अकबर ने जब्ती प्रणाली प्रचलित की।
- आइने-दहसाला व्यवस्था राजा टोडरमल ने लागू किया।
- अकबर के दरबार का प्रसिद्ध संगीतकार तानसेन था।
- दसवंत एवं बसावन प्रसिद्ध चित्रकार थे।
- अकबर ने मनसबदारी व्यवस्था की शुरूआत की।
- सूफी संत शेख सलीम चिश्ती अकबर के समकालीन थे।

शासक	मकबरा
बाबर	काबुल
हुमायूँ	दिल्ली
अकबर	सिकंदरा (आगरा)
जहांगीर	लाहौर
शाहजहां	आगरा
औरंगजेब	औरंगाबाद

- अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना की।
- अकबर के दरबार को सुशोभित करने वाले नौ रत्न थे। जिसमें प्रमुख थे– बीरबल, अबुलफजल, टोडरमल, तानसेन, भगवान दास।
- अबुल फजल ने अकबरनामा ग्रंथ की रचना की।
- अकबर ने बीरबल को कविप्रिय एवं नरहरि को महापात्र की उपाधि प्रदान की।
- बुलन्द दरवाजा का निर्माण अकबर ने गुजरात विजय के उपलक्ष्य में करवाया।
- मुगलों की राजकीय भाषा फारसी थी।
- अकबर के शासन को हिन्दी सहित्य का स्वर्णकाल माना जाता है।
- अकबर ने झरोखा दर्शन व तुलादान को प्रारम्भ किया।

बीरबल के बचपन का नाम महेशदास था।

जहांगीर

- बचपन का नाम – सलीम
- पिता – अकबर
- माता – मरियम उज्जमानी
- जन्म स्थान – सलीम चिश्ती की कुटिया में
- जहॉगीर ने 'न्याय की जंजीर' लगाई थी।
- प्रथम विवाह – भगवानदास की पुत्री मानबाई के साथ।
- जहांगीर ने अबुलफजल की हत्या बुन्देला द्वारा करवाई थी।
- जहॉगीर ने 12 घोषाणायें प्रकासित करवाई जिसका नाम आइन-ए-जहांगीरी था।
- 1611 में जहांगीर ने नूरजहां से विवाह किया।
- नूरजहां की माँ अस्मत बेगम ने गुलाब से इत्र निकालने की विधि खोजी थी।
- जहांगीर की मृत्यु 1627 में भीमवार नामक स्थान पर हुई।
- जहांगीर के समय मुगल चित्रकला चरमोत्कर्ष पर था। प्रमुख चित्रकार– मंसूर, अबुल हसन, बिशनदास, मनोहर, फरूख बेग।
- खूसरों को सहायता देने के कारण जॅहागीर ने सिक्खों के पाचवें गुरू अर्जुनदेव को फांसी दी थी।
- मंसूर को नादिर-उल-अज्र एवं अबुल हसन को नादिर-उज-जमां की उपाधि जहांगीर ने दी थी।
- एतमादुद्दौला का मकबरा नूरजहां ने बनवाया था। सर्वप्रथम इसी इमारत में पितरादयूरा नामक जड़ाउ का काम किया गया।
- अशोक के कौशाम्बी स्तम्भ लेख पर समुद्रगुप्त के प्रयाग प्रशस्ति तथा जहांगीर का लेख उत्कीर्ण है।
- जहांगीर के मकबरे का निर्माण नूरजहां ने करवाया था।
- नूरजहां का नाम मेहरुन्निसा था।
- कैप्टन हॉकिन्स, टॉमस रों जहांगीर के काल में भारत आये।

शाहजहां

- पिता – जहांगीर
- शाहजांह ने महावत खाँ को खानेखाना की उपाधि दी।

- माता – जगत गोसाई
- जन्म स्थान – लाहौर
- बचपन का नाम – खुर्रम
- अमीन का पद शाहजांह के शासनकाल में आया।
- विवाह – अर्जुमन्द बानो बेगम (मुमताज महल)
- वास्तुकला की दृष्टि से स्वर्णकाल कहा जाता है।
- इसने प्रसिद्ध ताजमहल का निर्माण अपनी बेगम मुमताज महल की याद में आगरा में करवाया।
- ताजमहल के मुख्य स्थापत्य कलाकार उस्ताद अहमद लाहौरी था।
- मयूर सिंहासन का निर्माण शाहजहां ने किया।
- शाहजहां के शासनकाल में बनवाई गई कुछ इमारतें– दिल्ली का लाल किला, दिल्ली की जामा मस्जिद, आगरा की मोती मस्जिद, ताजमहल, दीवाने आम, दीवाने खास।
- दारा शिकोह ने 'मजमउल बहरैन' पुस्तक की रचना की।
- शाहजहां राजधानी को आगरा से दिल्ली लाया।
- शाहजहां के दरबार के प्रमुख चित्रकार– मुहम्मद फकीर एवं मीर हासिम।
- शाहजहां के पुत्र दाराशिकोह ने भगवतगीता, योगवशिष्ठ, उपनिषद् एवं रामायण का अनुवाद फारसी में करवाया।
- शाह बुलंद इकबाल दाराशिकोह को कहा गया।
- शाहजांह ने 'हिजरी संवत' को ईलाही संवत की जगह चलाया था।

औरंगजेब

- औरंगजेब को 'जिन्दा पीर' कहा जाता था।
- पिता – शाहजहां
- माता – मुमताजमहल
- औरंगजेब ने दो बार राज्याभिषेक कराया था।
- झरोखा दर्शन पर रोक लगाई।
- नौरोज उत्सव पर रोक लगाई।
- संगीत पर प्रतिबंध लगाया।
- सार्वजनिक संगीत समारोह पर रोक।
- सिक्कों पर कलमा खुदवाना बंद।
- औरंगजेब का मुख्य उद्देश्य भारत को 'दारूल इस्लाम' बनाना था।
- एक मात्र मुगल शासक जो विणा वादक था।

औरंगजेब द्वारा किये गये कार्य

कार्य		समय
सती प्रथा पर प्रतिबंध	–	1663
हिन्दुओं पर तीर्थ यात्रा कर लगाया	–	1663
झरोखा दर्शन की समाप्ति	–	1670
तुलादान प्रथा की समाप्ति	–	1671
जजिया कर लगाया	–	1679

विद्रोह	नेता
(1) जाट विद्रोह	गोकूला, राजाराम, चुणामल
(2) सतनामी	सतनामीयो द्वारा
(3) अफगान	भामू, अकमल खां
(4) बुंदेला	चम्पतराय, छत्रसाल

- 1699 में मंदिर तोड़ने का आदेश जारी किया।
- औरंगजेब के समय तेग बहादुर को फांसी दे दी गई।
- औरंगजेब के समय हिन्दू अधिकारियों की संख्या सर्वाधिक थी।
- औरंगजेब सुन्नी धर्म को मानता था, इसे जिन्दापीर कहा जाता था।
- औरंगजेब ने बीबी के मकबरे का निर्माण 1679 में औरंगाबाद (महाराष्ट्र) में करवाया।
- बीजापुर एवं गोलकुण्डा को औरंगजेब ने अपने साम्राज्य में मिलाया।

मुगलकालीन महत्वपूर्ण तथ्य:

शेरशाहकालीन प्रशासन:-	आधिकारी
(1) केन्द्रीय प्रशासन	दीवाने वजारत, दीवाने अर्ज दीवाने रसालत, दीवाने इंशा
(2) प्रांतीय प्रशासन	सिकदार
(3) सरकार (जिला) प्रशासन	सिकदार -ए-सिकदारन
(4) परगना प्रशासन	सिकदार, मुंसिफ, फोतदार
(5) ग्राम प्रशासन	चौकीदार, पटवारी, प्रधान

- शेरशाह की लगान व्यवस्था रैयतवाड़ी थी।

सिक्का:	धातु:	राजा:
(1) मुहर	सोना	अकबर
(2) सनशब	सोना	अकबर
(3) ईलाही (गोला आकार)	सोना	अकबर
(4) जलाली	चांदी	अकबर
(5) रूपया	चांदी	शेरशाह
(6) दाम	तांबा	शेरशाह
(7) निसार	तांबा	जाहांगीर

- जात से व्यक्ति के वेतन एंव प्रतिष्ठा का ज्ञान होता था जबकि सवार पद से घुड़सवार दस्तों की सख्या का ज्ञान होता था।
- मनसबदारी पद्धति मंगोलो की दशमलव प्रणाली पर आधारित थी।
- बाबर नक्शबंदी सम्प्रदाय का अनुयायी।

मुगल काल के प्रमुख अधिकारी एवं कार्य

पद	कार्य

सूबेदार	प्रान्तों में शान्ति स्थापित करना
दीवान	प्रांतीय राजस्व का प्रधान
बख्शी	प्रांतीय सैन्य प्रधान
आमिल	जिले का राजस्व अधिकारी
कोतवाल	नगर प्रधान

- मंत्रिपरिषद को विजारत कहा जाता था।
- सम्राट के घरेलू विभागों का प्रधान मीर समान कहलाता था।
- अकबर के शासनकाल में 15 सुबे थे।

साम्राज्य का विभाजन

–

सूबा

–

सरकार

–

परगना/महल

–

जिला/दस्तूर

–

ग्राम

अधिकारी	**पद**
मीर -ए-बहर	जल सेना प्रधान
मीर-ए-बर्र	वन विभाग अध्यक्ष
खुफिया नवीस	गुप्त पत्र लेखक
वाकिया नवीस	समाचार लेखक
अमिल	करोड़ी
मुसदी	बन्द्रगाहों का प्रशासक

- शाहजहां के काल में सरकार एवं परगना के बीच **चकला** नामक नई इकाई की स्थापना की गई।
- अनुदान में दी गई भूमि को सयूरगल/ मदद-ए-माश कहा जाता था।
- 1580 में अकबर ने दहसाला नामक नई कर प्रणाली आरंभ की। इसे टोडरमल व्यवस्था भी कहा जाता है।
- आना सिक्के का प्रचलन शाहजहां ने करवाया।
- स्वर्ण का सबसे प्रचलित सिक्का इलाही था।
- मुगलकालीन अर्थव्यवस्था का आधार चांदी का रुपया था।
- जहांगीर ने दु-अस्पा-सिंह-अस्पा व्यवस्था की शुरूआत मनसबदारी प्रथा में की।

पुस्तक	**लेखक**
बाबरनामा	बाबर
हुमायूँनामा	गुलबदन बेगम
तोहफा-ए-अकबरशाही	अब्बास खां सरवानी
अकबरनामा	अबुलफजल
मजमउल बहरैन	दाराशिकोह
फुतुहात-ए-आलमगीरी	ईश्वरदास नागा

- राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद मौलाना शेरी ने किया।
- अथर्ववेद का अनुवाद फारसी में हाजी इब्राहीम सरहिन्दी ने किया।
- महाभारत का फारसी भाषा में **रज्मनामा** नाम से अनुवाद बदायूँनी, नकीब खां एवं अब्दुल कादिर ने किया।
- रामायण का अनुवाद फारसी में नकीब खां एवं अब्दुल कादिर बदायूँनी ने किया।
- भागवत पुराण का अनुवाद फारसी में टोडरमल ने किया।

मुगल कालीन राजस्व प्रणाली

- भूमिकर के विभाजन के आधार पर मुगल साम्राज्य की समस्त भूमि 3 वर्गों में विभक्त थी–

1. **खालसा भूमि–** यह भूमि प्रत्यक्ष रूप से बादशाह के नियंत्रण में थी। इस आय का उपयोग व्यक्तिगत खर्च पर (शाही परिवार), राजा के अंगरक्षक एवं निजी सैनिक, युद्ध की तैयारी आदि पर किया जाता था। यह सम्पूर्ण साम्राज्य का लगभग बीस प्रतिशत था।
2. **जागीर भूमि–** यह भूमि राज्य के प्रमुख कर्मचारियों को उनकी तनख्वाह के बदले दी जाती थी। साम्राज्य की अधिकांश भूमि जागीर भूमि के अन्तर्गत होती थी।
3. **सयूरगल व 'मदद-ए-माश'–** यह भूमि अनुदान के रूप में धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति को दे दी जाती थी। इस भूमि को **'मिल्क'** भी कहा जाता था।

अकबर ने 1580 में **'दहसाला'** नाम की नवीन प्रणाली को प्रारम्भ किया। इस प्रणाली के अन्तर्गत करीब 10 वर्ष का औसत निकालकर उस औसत का एक तिहाई भू-राजस्व के रूप में निश्चित किया गया। आइने दहसाला व्यवस्था को टोडरमल व्यवस्था भी कहा जाता था। इस व्यवस्था के अंतर्गत भूमि को पैमाइश हेतु 4 भागों में विभाजित किया गया।

1. **पोलज–** इस भूमि पर नियमित रूप से खेती होती थी।
2. **परती–** यह भूमि उर्वरा-शक्ति प्राप्त करने हेतु एक या दो वर्ष तक परती पड़ी रहती थी।
3. **छच्छर या चाचर–** जिस भूमि पर करीब तीन या चार वर्षों तक खेती नहीं की जाती थी।
4. **बंजर–** निकृष्ट कोटि की भूमि जिसे करीब 5 वर्षों तक काश्त में प्रयोग में न लाया गया हो।

कानकूत प्रथा में खेतों को पैरो से मापा जाता था फिर पैदावार के आधार के राजस्व वसुला जाता था।

मुद्रा व्यवस्था

- चांदी का रुपया मुगलकालीन अर्थव्यवस्था का आधार था। यह 175.5 ग्रेन का था। अकबर ने **जलाली** नाम का चौकोर आकार का रुपया चलाया।
- तांबे का **दाम** व **पैसा** या **फलूस** 323.5 ग्रेन का था।
- स्वर्ण का सर्वाधिक प्रचलित सिक्का 'इलाही' एवं सबसे बड़ा सिक्का 'शंसब' था।
- टकसाल का अधिकारी चौधरी कहलाता था।
- शाहजहॉ ने दाम और रुपये के मध्य एक नये 'आना' सिक्के का प्रचलन करवाया।
- मुगलकाल में सर्वाधिक रुपये की ढलाई औरंगजेब के काल में हुई।
- जहांगीर ने अपने समय में सिक्कों पर अपनी आकृति बनवायी। साथ ही अपना नाम तथा नूरजहॉ का नाम उस पर अंकित करवाया।
- औरंगजेब के समय में रुपये का वजन 180 ग्रेन होता था। एक रुपये में '40 दाम' होता था।
- औरंगजेब ने सिक्को पर कलमा खुदवाने पर रोक लगा दी।
- गल्ला बख्शी सबसे पुरानी मुगलकालीन कर प्रणाली थी
- अकबर ने इलाही गज का भूमि मापने में प्रयोग किया।

कृषि

- अबुल फजल ने आईने अकबरी में रबी की 16 तथा खरीफ की 25 फसलों का उल्लेख किया है।

मुख्य फसलें	उत्पादक क्षेत्र
गन्ना	उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार
नील	मध्यभारत
गेहूँ	पंजाब, उत्तरप्रदेश, बिहार
अफीम	मालवा, बिहार
चावल	मद्रास, कश्मीर
नमक	सांभर झील, गुजरात, सिंध

मुगलकालीन वास्तुकला

- मुगलकाल में वास्तुकला के क्षेत्र में पहली बार 'आकार' एवं 'डिजाइन' की विविधता का प्रयोग तथा निर्माण की सामग्री के रूप में पत्थर के अलावा पलस्तर एवं गचकरी का प्रयोग किया गया। सजावट के क्षेत्र में संगमरमर पर जवाहरात में की गयी जड़ावट (च्पमजतं क्नतं) का प्रयोग भी इस काल की एक विशेषता थी।
- मुगलकाल को उसकी सांस्कृतिक विधियों के कारण भारतीय इतिहास का दूसरा स्वर्ण काल कहा जाता है।
- **बाबर–** बाबर ने आगरा में ज्यामितीय विधि पर आधारित एक उद्यान का निर्माण करवाया।

ख **हुमायूँ–** 1533 में दीनपनाह (धर्म का शरणस्थल) नामक नगर की नींव डाली। इसे 'पुराना किला' भी कहा जाता है।

- **शेरशाह–** वास्तुकला के क्षेत्र में 'संक्रमण काल' माना जाता है। इसने दिल्ली में 'शेरगढ़' या 'दिल्ली शेरशाही' की नींव डाली।
- शेरशाह ने दीनपनाह को तुड़वाकर उसके मलवे पर 'पुराने किले' का निर्माण करवाया। 1542 में शेरशाह ने इस किले के अन्दर 'किला-ए-कुहना' नामक मस्जिद का निर्माण करवाया। शेरशाह का **सासाराम** (बिहार) का मकबरा वास्तुकला का श्रेष्ठ नमूना है।

अकबर

- **हुमायूँ का मकबरा–** इसका निर्माण अकबर की सौतेली माँ 'हाजी बेगम' की देखरेख में 1564 में हुआ। ईरानी प्रभाव के साथ-साथ इस मकबरे में हिन्दू शैली की 'पंचरथ' से भी प्रेरणा ली गई है।
- **आगरा का किला–** 1566 में अकबर के वास्तुकार 'कासिम खां' के नेतृत्व में इस किले का निर्माण कराया।
- पंचमहल का निर्माण अकबर ने करवाया।
- **फतेहपुर सीकरी–** अकबर ने सलीम के जन्म के बाद 1571 में 'शेख सलीम चिश्ती' के प्रति आदर प्रकट करने के उद्देश्य से फतेहपुर सीकरी के निर्माण का आदेश दिया। 1570 में अकबर ने गुजरात को जीतकर इस स्थान का नाम 'फतेहपुर सीकरी' रखा।
- **बुलन्द दरवाजा–** इसका निर्माण गुजरात विजय के उपलक्ष्य में अकबर द्वारा।

जहांगीर

- **अकबर का मकबरा–** सिकन्दरा में स्थित इस मकबरे की योजना स्वयं अकबर ने बनाई थी परंतु 1613 तक अन्तिम रूप से इसका निर्माण कार्य जहांगीर ने पूरा करवाया।
- **जहांगीर का मकबरा–** लाहौर में रावी नदी के किनारे स्थित 'शहादरा' नामक स्थान पर निर्मित इस मकबरे के अधिकांश भाग का निर्माण जहांगीर की पत्नी नूरजहां ने करवाया था।
- **एतमाद-उद्-दौला का मकबरा–** इसका निर्माण 1626 में नूरजहां बेगम ने करवाया। मुगलकाल की यह प्रथम ऐसी इमारत है जो पूर्ण रूप से बेदाग सफेद संगमरमर से निर्मित्त है। सर्वप्रथम इसी इमारत में 'पित्रादुरा' नाम की जड़ाऊ का काम किया गया।

शाहजहाँ

- सफेद संगमरमर के प्रयोग का चरमोत्कर्ष काल।
- **जामा मस्जिद–** आगरा किले में स्थित इस मस्जिद का निर्माण शाहजहां की पुत्री जहांआरा बेगम ने 1648 में करवाया।
- **जामा मस्जिद–** दिल्ली की प्रसिद्ध जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहां ने 1648 में करवाया।
- **ताजमहल–** आगरा में यमुना नदी के तट पर स्थित ताजमहल

का निर्माण शाहजहां की देख-रेख में 'उस्ताद इसा खां' ने सम्पन्न करवाया। मकबरे की योजना 'उस्ताद अहमद लाहौरी' ने तैयार की थी। शाहजहां ने लाहौरी को 'उस्ताद-उल-असर' की उपाधि प्रदान की।

औरंगजेब

- बादशाही मस्जिद लाहौर का निर्माण औरंगजेब ने करवाया था।
- रबिया दुरानी का मकबरा, मोतीमस्जिद (दिल्ली के लालकिला में) का निर्माण भी औरंगजेब ने ही करवाया।

चित्रकला

- तैमूरी चित्रकला को चरमोत्कर्ष पर ले जाने का श्रेय 'बेहजाद' को जाता है। बेहजाद को 'पूर्व का राफेल' भी कहा जाता है। यह बाबर के समय का महत्वपूर्ण चित्रकार था।
- 'मीर सैय्यद अली' एवं 'ख्वाजा अब्दुस्समद' हुमायूँ के चित्रकार थे। अब्दुस्समद द्वारा बनाई गई कुछ कृतियों का संकलन जहांगीर के 'गुलशन चित्रावली' में किया गया है।
- हम्जानामा मुगल चित्रशाला की प्रथम महत्वपूर्ण कृति है, इसे 'दास्ताने-अमीर-हम्जा' भी कहा जाता है। इसमें कुल करीब 1200 चित्रों का संग्रह है।
- आइने अकबरी में अबुल फजल ने करीब 17 चित्रकारों का उल्लेख किया है जिनका संबंध अकबर के राजदरबार से था। जिनमें प्रमुख हैं– दसवंत, बसावन, केशवलाल इत्यादि।
- बसावन को अकबर के समय का सर्वोत्कृष्ट चित्रकार माना जाता है। अकबर के समय में पहली बार 'मित्ती चित्रकारी' की शुरूआत हुई।
- जहांगीर ने हेरात के आगारजा के नेतृत्व में आगरा में एक चित्रणशाला की स्थापना की। जहांगीर के समय प्रमुख चित्रकार थे– फारूख बेग, दौलत, मनोहर, बिसनलाल, मंसूर एवं अबुल हसन।
- उस्ताद मंसूर एवं अबुल हसन को जहांगीर ने 'नादिर-उल-अस्र' एवं 'नादिर-उज-जमा' की उपाधि प्रदान की। उस्ताद मंसूर की महत्वपूर्ण कृति में 'साइबेरिया का बिरला सारस' एवं 'बंगाल का एक पुष्प' है।
- मुहम्मद फकीर एवं मीर हासिम शाहजहां के प्रमुख चित्रकार थे।
- चित्रकार दंशवत ने आत्महत्या कर ली थी।

मुगलकालीन संगीत

- अकबर के समय में 'ध्रुपद' गायनशौली एवं वीना (वाणी) का प्रचार हुआ। तानसेन अकबर के नवरत्नों में से एक था।
- तानसेन के अतिरिक्त अन्य ध्रुपद गायके थे– बैजबख्श, गोपाल, हरिदास, सूरदास आदि।
- अकबर ने तानसेन को 'कण्ठाभरणवाणी विलास' की उपाधि दी।
- तानसेन की प्रमुख रचनाएँ थीं– मियाँ की टोड़ी, मियाँ की मल्हार, मियाँ की सारंग, दरबारी कान्हरा आदि।
- 'राम सागर' ग्रंथ की रचना अकबर के दरबार में की गयी।
- जहांगीर के दरबार के प्रमुख कलाकारों में तानसेन के पुत्र विलास खां, छत्तर खां एवं हमजान थे।
- एक गजल गायक 'शोकी' को जहांगीर ने आनन्द खां की उपाधि दी।
- शाहजहां ने विलास खां के दामाद लाल खां को 'गुन समन्दर' की उपाधि दी।
- औरंगजेब के काल में फकीरूल्लाह ने 'मान कुतूहल' का अनुवाद 'राग दर्पण' नाम से करके औरंगजेब को अर्पित किया।